Toppersnotes®
Unleash the topper in you

JHARKHAND–TET

उच्च प्राथमिक स्तर

JHARKHAND TEACHER ELIGIBILITY TEST

भाग - 4

समाज अध्ययन शिक्षक

इतिहास व राजव्यवस्था

SIERRA INNOVATIONS

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	भारत का इतिहास	
1.	प्राचीन इतिहास	1
2.	सिन्धु घाटी सभ्यता	3
3.	वैदिक काल	9
4.	महाजनपद	13
5.	गुप्त एवं मौर्य साम्राज्य	14
6.	जैन एवं बौद्ध धर्म	34
7.	गुप्तोत्तर काल	41
8.	वृहत्तर भारत	60
9.	भक्ति एवं सूफी आन्दोलन	62
10.	मुगल काल एवं मुगल व राजपूत सम्बन्ध	74
11.	भारतीय राज्यो के प्रति ब्रिटिश नीति	90
12.	भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश प्रभाव	94
13.	1857 का विद्रोह	101
14.	पुनर्जागरण एवं सामाजिक सुधार	104
15.	राष्ट्रीय आन्दोलन या स्वतन्त्रता आन्दोलन	107
	राजनीतिक विज्ञान	
1.	भारतीय संविधान का निर्माण एवं विशेषताएँ	119
2.	मूल अधिकार एवं मूल कर्त्तव्य	125
3.	बाल अधिकार एवं संरक्षण	129
4.	सामाजिक न्याय	131
5.	लोकतंत्र में निर्वाचन व मतदाता जागरूकता	132
6.	राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति	134
7.	प्रधानमंत्री एवं मंत्री परिषद	147

8.	संसद	150
9.	उच्चतम न्यायालय	162
10.	राज्य मंत्रीपरिषद्	169
11.	राज्य निर्वाचन आयोग	174
12.	स्थानीय स्वशासन	175
13.	संविधान संशोधन	181
14.	विविध	184

भारत का इतिहास

प्राचीन इतिहास

- इतिहास शब्द ग्रीक अथवा यूनानी भाषा के शब्द हिस्टोरिया से बना है जिसका अर्थ होता है खोज अथवा छानबीन ।
- इतिहास का संबंध अतीत की उन घटनाओं से है जिनका हमारे पास लिखित एवं प्रमाणित तिथि उपलब्ध है ।
- ग्रीका विद्वान हैरोडोट्स ने इतिहास की प्रथम पुस्तक ''हिस्टोरिका'' लिखी ।
- हैरोडोट्स को इतिहास का पिता कहा जाता है ।
- इतिहास को जानने के लिए निम्न स्त्रोत है ।
  1. पुरातात्विक स्त्रोत
  2. साहित्य स्त्रोत
  3. विदेशी यात्रियों का यात्रा वृतांत

अध्ययन की दृष्टि से भारतीय इतिहास को हम निम्न प्रकार बांट सकते है ।

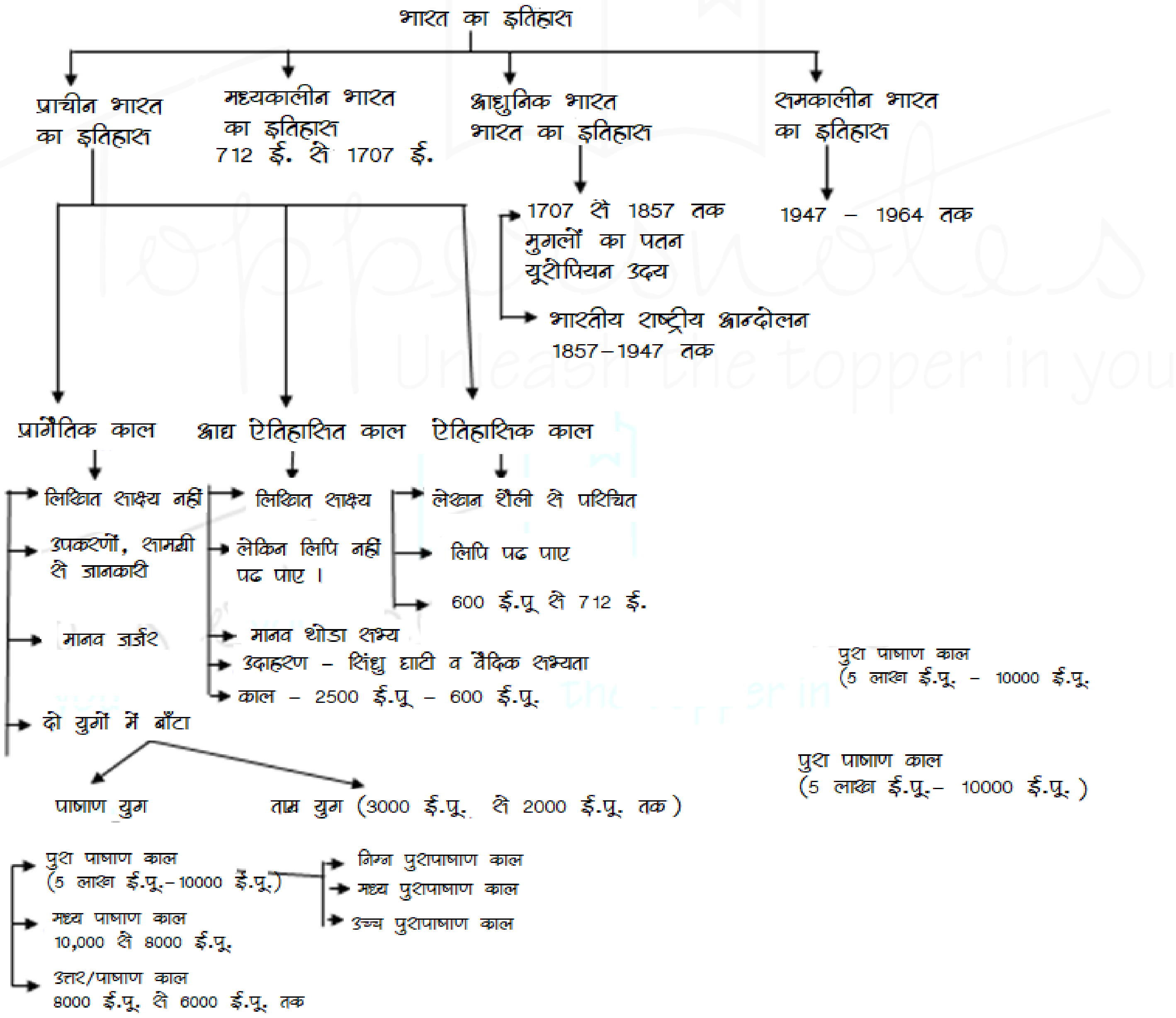

पुरापाषाण काल

- आधुनिक मानव होमो सैपिनियंस का उदय ।
- मानव आग जलाना ।
- इस काल में चापर – चौपिग संस्कृति का उदय, डी एन वाडिया ने खोज की, यह उत्तर भारतीय संस्कृति है ।
- दक्षिण भारत की संस्कृति हैण्ड – एक्स संस्कृति है इसकी खोज रॉबर्ट ब्रुस फुट ने की ।
- चापर–चौपिंग एवं हैण्ड एक्स संस्कृति (उत्तर एवं दक्षिण) मिलन स्थल चौतरान (जम्मू कश्मीर) है ।

प्रमुख स्थल

भीम बेटका – शैला शील चित्रों के प्रसिद्ध;
डीडवाना (राजस्थान); हथनौरा

मध्य पाषाण काल

- इस काल को माइक्रोलिथ काल कहते है । छोटे – छोटे पाषाण उपकरणों के कारण ।
- भारत में इस काल का जनक HCL क्लाईल ।
- मानव न इस काल में सर्वप्रर्थम पशु पालन करना सीखा ।
- पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य है । बागैार (राजस्थान) एवं आदमगढ (MP)
- मध्य पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल सराय नाहर यूपी है ।

उत्तर/नव पाषाण काल

- सर जॉन लुबाक ने नव पाषाण काल शब्द दिया ।
- गार्डन चाइल्ड ने इस काल को ''नव पाषाणिक क्रांति'' कहा ।
- ली मेंसियर ने उत्तर भारत में नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- नेविलियन फ्रैजर ने दक्षिण भारत से नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- मानव ने कृषि करना सीखा ।
- वृहद पैमाने पर पशुपालन एवं ग्रामीण संस्कृति के साक्ष्य मिले ।

प्रमुख स्थल

1. मेहरगढ (पाक) – नव पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल
   8000 BC पूर्व कृषि के साथ साक्ष्य मिले ।
2. कोल्डी हवा – (यूपी) – 6000 वर्ष पूर्व चावल की खेती के साक्ष्य मिले ।
3. बुर्जहोम एवं गुपफकराल (J-K) बुर्जहोम से मानव के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य भी मिले है ।

नोट –

प्रागऐतिहासिक काल के जनक भारत में डा. प्राइम रोज थे । जिन्होने लिंगसुमुर (कर्नाटक) से पाषाण कालीन उपकरण खोजे थे । नव पाषाण काल में दक्षिण भारत की प्रमुख फसल रागी थी ।

सिन्धु घाटी सभ्यता

परिचय

हडप्पा सभ्यता

- चार्ल्स मेसन – 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया ।
- जॉन ब्रंटन व विलियम ब्रंटन – 1856 ई हडप्पा नगर का सर्वे किया ।
- कनिघम इस ओर ध्यान दिलाया कनिघम को भारतीय पुरातात्विक विभाग का पितामह कहा जाता है ।
- 1921 में सर जॉन मार्शल के निर्देशन में दयाराम साहनी ने इसका उत्खनन किया ।
- सर्वप्रर्थम इस स्थल की खोज होने के कारण यह स्थल हडप्पा सभ्यता कहलाया ।

अन्य नाम

सिंधु घाटी सभ्यता
सरस्वती नदी घाटी सभ्यता
कांस्य युगीन सभ्यता
नगरीय सभ्यता

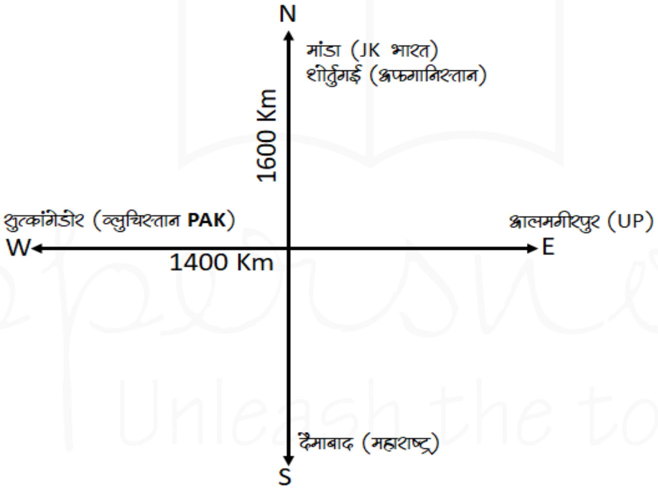

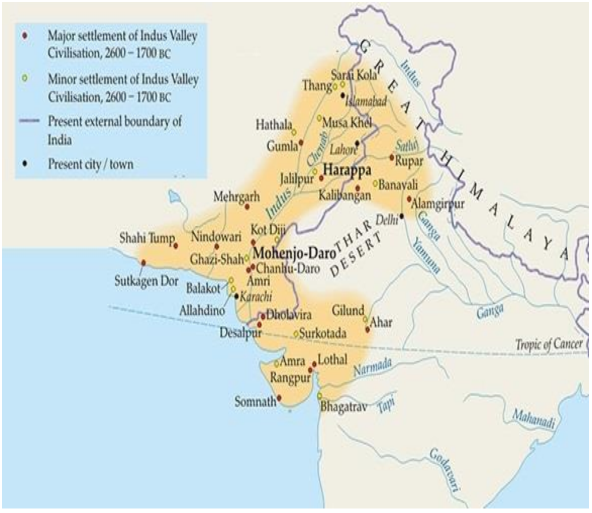

1300 किमी समुद्री सीमा

नोट

- अफगानिस्तान में सिंधु घाटी सभ्यता के मात्र दो स्थल थे । सार्तगोई एवं मुंडीगॉक है ।
- सार्तगोई से नहरों द्वारा सिंचाई के साक्ष्य मिले है
- सिंधु घाटी सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया के सभ्यता से 12 गुना बडी थी । जबकि मिश्र की सभ्यता से 20 गुना बडी थी ।
- आजादी से पूर्व खोजे समस्त स्थल पाकिस्तान में चले गये । भारत में केवल दो स्थल रहे, रंगपुर (गुजरात) और कोटला निहंगखां (रोपड पंजाब)
- भारत का सबसे बडा स्थल राखीगढी (हरियाणा) है, दूसरा बडा स्थल धौला वीरा (गुजरात) है ।
- पिग्गट ने हडप्पा एवं मोहनजोदडो को सिन्धु सभ्यता की जुँडवा राजधानी बताया है ।
- बडे नगर (पाकिस्तान)
    - गनेडीवाल
    - हडप्पा
    - मोहनजोदडों

कालक्रम

जॉन मार्शल – 3250 ईसा पूर्व – 2750 ईसा पूर्व
माधोस्वरूप वत्स – 3500 ईसा पूर्व – 2700 ईसा पूर्व
रेडियो कार्बन पद्वति – 2300 ईसा पूर्व – 1750 ईसा पूर्व
एनसीआरटी – 2500 ईसा पूर्व – 1750 ईसा पूर्व
फेयर सर्विस – 2000 ईसा पूर्व – 1500 ईसा पूर्व
अर्नेस्ट मैके – 2800 ईसा पूर्व – 2500 ईसा पूर्व

निवासी

यहां से प्राप्त कंकालों के अधार पर चार प्रजातियों में बांटा जा सकता है ।

1. **भूमध्य सागरीय**
2. **अल्पाईन**
3. **मंगोलायड**
4. **प्रोटो आस्ट्रालायड**

सर्वाधिक प्रजाति भूमध्य सागरीय प्रजाति मिली है ।

नगर नियोजन

- नगर दो भागों में विभाजित – पश्चिमी भाग एवं पूर्वी भाग । पश्चिमी भाग दुर्ग था, पूर्वी भाग सामान्य नगर था ।
- पश्चिमी भाग में प्रशासनिक लोग रहते थे । तथापूर्वी भाग में जनसामान्य लोग रहते थे ।
- सिंधु घाटी सभ्यता में पक्की ईटों के मकान है ।
- सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओ मे इस विशेषता का अभाव ।
- नगर परकोटे युक्त होते थे ।
- घरों के दरवाजे मुख्य सडक की तरफ न खुलकर पीछे की तरफ खुलते थे । केवल लोथल में मुख्य सडक की तरफ घरों के दरवाजे खुलते थे ।
- कालीबंगा दोहरे परकोटे युक्त है । जबकि चन्हुदडो में कोई परकोटा नही ।
- धोलाबीरा तीन भागों में विभक्त है । पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्यमा ।
- लोथल एवं सुरकोटडा का पश्चिमी एवं पूर्वी भाग दोनो ही एक ही परकोटे से घिरे हुए है ।

- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बसाया था । सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौडी सडक 10 मीटर (मोहनजोदडो) की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरो मे उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बडी नालियो को ढक कर रखते थे ।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुआं होता था ।
  कच्ची एवं पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे ।
  ईंट का आकार – 1 : 2 : 4
  जल निकासी हेतु पक्की ईटों की नालियां होती थी विश्व की किसी अन्य सभ्यता में पक्की नालियों के साक्ष्य नही मिलते थे ।

प्रमुख नगर

1. हडप्पा

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (अब – शाहीवाल जिले मे) रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता – दयाराम साहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के आवास एवं अन्नागार मिलते हैं ।
- R – 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते है ।
- टीले पर निर्मित – व्हीलर ने "माउण्ट A – B" कहा
- शंख का बना बैल 18 वर्ताकार चबूतरे मिले है ।
- यहां से सर्वाधिक अभिलेख युक्त मुहरें मिली है ।
- 6 – 6 की पंक्ति में कुल 12 कमरों वाला आवास स्थल मिला है ।
- एक स्त्री के गर्भ से निकलता हुआ पौधा की मृणमूर्ति मिली है । सम्भवतः उर्वरता की देवी होगी ।

2. मोहनजोदडो

स्थिति त्र लरकाना (सिन्ध, PAK)
सिन्धु नदी के तट पर
उत्खननकर्ता त्र राखालदास बनर्जी
मोहनजोदडो का शाब्दिक अर्थ त्र मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) **विशाल स्नानागार –**
  a. 11.88 × 7.01 × 2.43 मीटर
  b. सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?
  c. सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(ii) विशाल अन्नागार सिंधु सभ्यता की सबसे बडी इमारत है । ल. 45.71×15.23 मीटर चौडी है ।
(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य
(iv) सूती कपडे के साक्ष्य
(V) हाथी का कपालखण्ड
(vi) कांसा की नर्तकी की मूर्ति मिली है ।
(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है ।
  (a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।

Unleash the topper in you

(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।
(ix) योगी की मूर्ति मिली है ।
(x) आघ शिव की मूर्ति मिली है ।
(xi) बाढ से पतन के साक्ष्य मिलते है ।
(xii) सर्वाधिक मुहरें सिंधु घाटी सभ्यता के यहां मिलती है ।

3. लोथल

स्थिति = गुजरात

- भोगवा नदी के किनारे
  उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)
  → यह एक व्यापारिक नगर था ।

(i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है
    (a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बडी कृति है ।
(ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
(iii) चावल के साक्ष्य
(iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटननुमा है
(v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
(vi) चक्की के दो पाट
(vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते हैं (एकमात्र)
(viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. सुरकोटडा / सुरकोटदा

स्थिति = गुजरात

(i) घोडे की हड्डियाँ
  सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

5. रोजदी (गुजरात)

हाथी के साक्ष्य

6. रोपड (PB)

मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

7. धौलावीरा

गुजरात – कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)
उत्खननकर्त्ता – रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)

- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया
- कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य । संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे । (दुर्गाभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था ।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवषेश मिलते है (खेल का मैदान)

8. चन्हुदडों

उत्खननकर्त्ता – एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) – अर्नेस्ट मैके

- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि ।
- औद्योगिक नगर
- झाकर एवं झुकर संस्कृति के साक्ष्य मिलते है ।
- कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के पद चिन्ह है ।
- एक सौन्दर्य पेटिका मिली है । जिसमें एक लिपिस्टिक है ।

कालीबंगाः– अवस्थिति– हनुमानगढ
नदी–घग्घर / सरस्वती / दृशद्वती / चौतांग
उत्खननकर्ता– अमलानन्द घोश
(1952)अन्य सहयोगी– बी. बी. लाल
बी. के. थापर
जे. पी. जोशी एम. डी. खर्रे
शाब्दिक अर्थ– काली चुड़िया
(पंजाबी भाषा का शब्द)
उपनाम– दीन हीन बस्ती– कच्ची ईटों के मकान ।

सामग्री

- सात अग्नि वेदिकाएँ एवं हवन कुण्ड मिले है ।
- युग्मित शवाधान प्राप्त हुए ।
- एक मानव कपाल खण्ड मिला है, जिसे मस्तिष्क शो धन बीमारी तथा शल्य चिकित्सा की जानकारी मिलती है ।
- जूते हुए खेत के साक्ष्य मिलते है (एकमात्र स्थान) एक साथ दो फसले, उगाया करते थे, जौ एवं सरसों
- मकान कच्ची ईटों के थे बल्लियो की छत होती थी
- जल निकाली हेतु लकडी की नालियों के साक्ष्य मिले है अर्थात सृदृढ जल निकासी व्यवस्था नही थी ।
- ईटों को धूप से पकाया जाता था ।
- वृताकार चबूतरे एवं बेलनाकार मुदरे (मैसोपोटामिया) मिली है ।
- लाल रंग के मिट्टी के बर्तन मिले है जिन पर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ खीचीं गई है ।
- यहां से एक खिलौना गाडी एवं पंख फैलाए बगुले की मूर्ति मिली है।
- यहां से बैल व वारहसिंहा के अस्थि अवशेष मिले है।
- यहां का नगर अन्य हड़प्पा स्थलों की तरह ही है, लेकिन यहां गढी एवं नगर दोनों दोहरे परकोटे युक्त है।
- यहां उत्खनन में पांच स्तर प्राप्त हुए है प्रथम दो स्तर प्राक हड़प्पा कालीन है । अन्य तीन स्तर समकालीन हडप्पा है
- यहां प्राचीनतम भूकम्प के साक्ष्य प्राप्त होते है ।
- इतिहाकसकार दशरथ शर्मा के अनुसार यह हडप्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी है ।
- यहां एक कब्रिस्तान मिला है जिसे यहां के लोगों की शवाधान पद्धति की जानकारी भी मिलती है।

हडप्पा लिपि

- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अक्षर
- इन्हें लिपि का ज्ञान था

- दायीं से बायीं ओर लिखते थे ।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव–चित्रात्मक लिपि थी ।
- 375 से 400 तक भाव एवं षब्दों का प्रयोग करते थे ।

पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यो का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल – बाढ
- लोम्बिरिक–सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आरस्टाईन एवं अमलानंद घोष–जलवायु परिवर्तन

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- कपास का उत्पादन सर्वप्रर्थम सिंधुवासियों ने किया ।
- सारगोन अभिलेख में सिंधु वासियों को मेलुहा {नाविको का देश) कहा गया है ।
- सिंधु वासियों का प्रिय पशु कुबड वाला बैल था ।
- दूसरा मुख्य पशु एक सींग वाला गेंडा था ।
- मातृ सत्तात्मक वाला समाज था ।

वैदिक काल (साहित्य)

1500 – 600 BC

इस काल को हम दो भागों में बांट सकते है ।

1. ऋग्वैदिक काल (1500 BC – 1000 BC)
2. उत्तरवैदिक काल (1000 BC – 600 BC)

परिचय

वैदिक सभ्यता आर्यो द्वारा बसाई गई सभ्यता है ।

1. वेद ⇒ श्रुति
2. ब्राह्मण ⇒
3. आरण्यक ⇒
4. उपनिषद ⇒ वेदान्त

— वैदिक साहित्य

(1) वेदांग
(2) धर्मशास्त्र
(3) महाकाव्य
(4) पुराण
(5) स्मृतियाँ

— वैदिक साहित्य का अंग नहीं है ।

इस काल का इतिहास इस काल में लिखे गए साहित्य पर आधारित है । इस साहित्य को वैदिक साहित्य/श्रव्य साहित्य भी कहा जाता है । जो निम्न है ।

वेद

- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया
- वेदों का नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरूषेय माना जाता है
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते है ।
  वेद 4 है –

1. ऋग्वेद

- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10580 (10600) मन्त्र है ।
- पहला एवं 10वाँ मण्डल बाद में जोडे गए है ।
- दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल /परिवार मण्डल कहा जाता है ।
- तीसरे मण्डल मे गायत्री मन्त्र का उल्लेख मिलता है ।
  - गायत्री मंत्र की रचना विष्वामित्र ने की ।
  - गायत्री मंत्र सवितृ / सावितृ (सूर्य) को समर्पित है ।
- सर्वाधिक मूर्तियां मातृ देवी की मिली है ।
- लिंग एवं योनि की पूजा करते थे ।
- योग से परिचित थे ।
- प्राकृतिक बहुदेव वाद में विश्वास करते थे ।
- मृत्यु के बाद भी जीवन में विश्वास करते थे ।

- सिंधुवासी घोडा, गाय, षेर और ऊँट से परिचित नही थे ।
- सिंधु वासी लोहे से परिचित नही थे ।

2. यजुर्वेद

- यह 2 भागों में है – (प) शुक्ल यजुर्वेद
  (पप) कृष्ण यजुर्वेद
- यह गद्य एवं पद्य दोनों में है ।
- इसमें शून्य का उल्लेख मिलता है ।
- मंत्र पढने वाले को "अध्वर्यु" कहा जाता है ।
- यज्ञ – अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है ।
- उपवेद – धनुर्वेद

3. सामवेद

- संगीत का प्राचीनतम स्त्रोत
- वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते है ।
- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
- मन्त्रों का उच्चारण करने वाला = उद्गाता
- उपवेद = गन्धर्ववेद

4. अथर्ववेद

- अथर्व ऋषि तथा आंगीरस ऋषि – रचयिता
- अन्य नाम – अथर्वआंगीरस वेद
- इसमें काले जादू, टोने – टोटको व चिकित्सा का उल्लेख । औशधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र – मंत्र आदि ।
- मंत्रो का उच्चारण करने वाला – ब्रह्म
- उपवेद – शिल्पवेद ।

Unleash the topper in you

वेद एवं उनसे संबंधित उनके ब्राह्मणक, आरण्यक एवं उपनिशद् ग्रंथ

वेद	भाग	विषय	पुरोहित	ब्रह्मणक	आरण्यक	उपनिषद
ऋग्वेद	साकल बालखिल्य वास्कल	छन्द / प्रार्थनाएं	होता / होतृ	ऐतरैय	ऐतरैय कौशीतकी	एतरैय कौशील्की
यजुर्वेद	कृष्ण यजुर्वेद शुक्ल यजुर्वेद	उच्च स्वर में उचारित किये जाने वाले मंत्र	अघ्नर्यु	शतपथ तैतरैय मायान	तैतरैय मैत्रायणी	कठ, तैतरैय वृहदायण्यक नाराण्यणश्वर श्वेतसश्वर, ईश, मुण्डक
सामवेद	कौथूम, राणण्यम और जैनिय	संगीत, गायन	उदगता	पंचविश, षडविच जैमीनी	जैमीनी छन्दोग्य	केन जैमीनी छन्दोग्य
अथर्ववेद	शौनक,पीलाद	भौतिकवादी जादू, टोना लौकिक विधि विधान	ब्रहमा	गोपथ	–	प्रश्न, मुण्डक, मांडुक्य

- मुण्डकोपनिशद से सत्यमेव जयते लिया गया है ।
- प्रथम तीन वेदों को वेदत्रय कहा जाता है ।
- सबसे प्राचीन उपनिषद छान्दोग्य उपनिषद है ।
- उपनिषद को वेदांत कहते है ।

वेदांग

वेदों के सरलीकरण हेतु इनका निर्माण किया गया । यह वैदिक साहित्य का हिस्सा नही है । इसके छह भाग है–

1. शिक्षा – इसे वेदों की नासिका कहा जाता है ।
2. **ज्योतिष – इसे वेदों की आंख कहा जाता है ।**
3. व्याकरण – इसे वेदों का मुख कहा जाता है ।
4. छनद – इसे वेदों का पैर कहा जाता है ।
5. निरूक्त – इसे वेदों का कान कहा जाता है ।
6. कल्प – इसे वेदों की हाथ कहा जाता है ।

कल्प के अंतरर्गत शुल्व सूत्र ज्यामिति की सबसे प्राचीनग्रन्थ है ।

पुराण – संख्या – 18

ऋशि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया

- मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
- विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख
- वायु पुराण – गुप्त वंश का उल्लेख
- मार्कण्डेय पुराण – देवी महात्मय – (इसका भाग दुर्गासप्तशती) महामृत्युजंय मंत्र
- मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख

स्मृति साहित्य

- सबसे प्राचीन उपनिषद छान्दोग्य उपनिषद है ।
- इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है

आर्यो का निवास

- आर्यो के निवास के बारे में विभिन्न मत प्रचलित है
- बाल गंगाधर तिलक के अनुसार आर्यो का मूल निवास उत्तरी ध्रुव है ।
- दयानंद सरस्वती के अनुसार तिब्बत मूल के आर्य है
  डॉ. पैनका ने जर्मनी को मूल स्थान बताया ।
  मेक्स मूलर के अनुसार आर्य मध्य एशिया (वैक्टीरियाई) है

आर्यो के उत्पति के संबंधित हाल ही में राखीगढ में उत्खनन से भी आर्यो की मूल उत्पति के संबंध मे पता नही लग पाया ।
सिंधु वासियों का राखीगढ से जो डीएनए मिला है । वह डीएनए उत्तर भारतीयों एवं दक्षिण भारतीयों में भी पाया गया है ।

ऋग्वेद काल के अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है ।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी । (देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा)
- गंगा व सरयू का उल्लेख 1 – 1 बार
- यमुना का उल्लेख 3 बार
- "भुजवन्त" नामक पहाडी चोटी का उल्लेख – जो कि हिमालय है ।
- ऋग्ववैद में वर्तमान की कई नदियों का उल्लेख मिलता है ।

सिंधु	सिंध
झेलम	वितस्तता
रावी	परूषणी
व्यास	विपासा
सतलज	शतद्रि
चेनाब	अष्किीनी
सरस्वती	सरस्वती
गोमल	गोमती
स्वात	सुवास्तु
कुर्रम	कुर्भ
काबुल	कुम्भा

महाजनपद काल

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व का काल भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण कालखण्ड माना जाता है।
- उत्तरवैदिक काल में कबिलाई राज्यों के स्थान पर क्षेत्रीय राज्यों के गठन की जो प्रवृत्ति प्रारंभ हुई उसका पूर्ण विकास ईसा पूर्व छठी शताब्दी में हुआ।
- जो बड़े राज्य स्थापित हुए उन्हें महाजनपद के नाम से जाना गया।
- 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है।
- बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय व महावस्तु एवं जैन ग्रंथ भवगतीसूत्र में इन महाजनपदों का उल्लेख मिलता है।
- इस काल में लोहे के प्रयोग से एक नवीन कृषि प्रणाली का विकास हुआ इसी कारण बड़े राज्यों की स्थापना हुई।
- यह काल द्वितीय नगरीकरण का काल था।
- इस युग में विनिमय प्रणाली के रूप में मुद्राओं की शुरुआत हुई। ये मुद्राएँ आहत मुद्राएँ कहलाती थी।
- इस काल में राजतन्त्रात्मक व्यवस्था थी लेकिन दो जनपदों में गणतन्त्रात्मक व्यवस्था के प्रमाण मिलते हैं–

  1. वैशाली या वज्जी संघ 2. कुशीनारा के मल्ल
- यह काल धार्मिक क्रांति के लिए भी जाना जाता है।
- इसी काल में महावीर स्वामी तथा गौतम बुद्ध द्वारा जैन धर्म व बौद्ध धर्म का प्रवर्तन किया गया।

16 महाजनपद

क्र.सं.	महाजनपद	राजधानी	क्षेत्र
1.	अंग	चम्पा	भागलपुर व मुंगेर (बिहार महाभारत में अंग महाजनपद की राजधानी का नाम मालिनी मिलता है।)
2.	मगध	गिरिव्रज/राजगृह	बिहार के गया व पटाना जिलों में
3.	काशी	वाराणसी	वर्तमान वाराणसी और उसके आस–पास
4.	वत्स	कौशाम्बी	प्रयागराज के आस–पास
5.	वज्जि	वैशाली/विदेह मिथिला	मुजफ्फरपुर एवं दरभंगा के आस–पास
6.	मल्ल	कुशीनारा	उत्तरप्रदेश के देवरिया जिले में फैला था। यह कुशीनारा एवं पावा जनपदों का गणराज्य था।
7.	चेदि	शक्तिमती	बुन्देलखण्ड एवं झाँसी के आस–पास
8.	कुरु	इन्द्रप्रस्थ	दिल्ली, मेरठ के आस–पास का क्षेत्र
9.	पांचाल	काम्पिल्य या अहिच्छत्र	उत्तरप्रदेश–बरेली, बदायूं
10.	शूरसेन	मथुरा	
11.	अश्मक	पोतन/पोटली	गोदावरी नदी के तट पर फैला महाजनपद। नर्मदा नदी के दक्षिण में फैला एकमात्र जनपद था।
12.	गान्धार	तक्षशीला	पेशावर एवं रावलपिंडी में फैला क्षेत्र
13.	कम्बोज	राजपुर/हाटक	राजोरी एवं हजारा क्षेत्र
14.	मत्स्य	विराटनगर/बैराठ	राजस्थान के करौली, भरतपुर, अलवर, बैराठ क्षेत्र में फैला है।
15.	कोसल	श्रावस्ती	उत्तरप्रदेश के अवध, फैजाबाद का इलाका
16.	अवन्ति	उज्जैन/महिष्मती	मालवा के आस–पास का क्षेत्र

मौर्य काल

- 326 ई पू. मे यूनानी सेनापति सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया। इस समय मगध में नन्द वंश का शासक था।
- सिकन्दर के आक्रमण के कारण उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रान्त् में अराजकता फैल गयी। जिसकी जानकारी देने तक्षशिला का आचार्य विष्णुगुप्त घनाUन्द के दरबार में आया था।
- घनानन्द ने चाणक्य को अपमानित किया। जिसके बाद चाणक्य ने नन्द वंश के समूल विनाश की प्रतिज्ञा की।
- चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को एक शिकारी से 1000 कर्षापण में खरीदा।

चन्द्रगुप्त मौर्य

- पुराणों में मौर्यों को शुद्र कहा गया है।
- विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त मौर्य को कुशल अर्थात् निम्नकुल का कहा है।
- यूनानी लेखकों ने भी चन्द्रगुप्त मौर्य को निम्न परिस्थितियों में उत्पन्न माना है।
- वास्तव में मौर्य पिपलीवन (नेपाल) के क्षत्रिय थे तथा मोरों को पालने के कारण मौर्य कहलाए थे।
- सर्वप्रथम ग्रेनवेडेल ने बताया था कि मोर मौर्य का वंर्षीय चिन्ह था। जबकि राजकीय चिह्न सिंह था।
- यूनानी लेखकों में चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए निम्न नामों का उल्लेख किया।
- स्ट्रेबो व जस्टिन ने सैण्ड्रोकोटस
  एरियन व प्लूटार्क ने एण्ड्रोकोटस
  फिलारकस ने सैण्ड्रोकोप्टस
- सर्वप्रथम विलियम जोंस ने यह मत दिया कि यूनानी साहित्य में उल्लेखित यह व्यक्ति चन्द्रगुप्त मौर्य है।
- चन्द्रगुप्त ने मद्र देश (पंजाब) से विद्रोह का प्रारम्भ किया जिसे शीघ्र ही दबा दिया गया।
- इसके बाद यूनानी क्षेत्रों पर से आक्रमण करके चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध पर अधिकार किया।
- जस्टिन ने चन्द्रगुप्त की सेना को डाकूओं की सेना कहा।
- प्लूटार्क ने लिखा की चन्द्रगुप्त ने 6 लाख की सेना लेकर पूरे जम्बूदीप को रोंद डाला था।
- 305 ई.पू. मे चन्द्रगुप्त मौर्य का सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस से युद्ध हुआ जिसमें चन्द्रगुप्त विजय रहा।
- सेल्यूकस ने अपनी पुत्री हेलना का विवाह चन्द्रगुप्त से किया व 4 प्रान्त दहेज के रूप में दिये।
  1. ऐरिया–हेरात
  2. पेरिपेमिसई–काबुल
  3. अराकोसिया–कंधार
  4. जेण्ड्रोसिया–ब्लूचिस्तान
- सेल्यूकस ने मेगस्थनीज को दूत बनाकर चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था।
- चन्द्रगुप्त के दक्षिणी भारत के विजय की जानकारी अहनानूर व मूरनानूर नामक ग्रंथों से मिलती हैं।
- संगम कालीन कवि मामूलनार ने भी चन्द्रगुप्त के दक्षिण विजय की जानकारी दी।
- चन्द्रगुप्त ने अंतिम दिनों मे जैन धर्म अपना लिया था।
- जैन आचार्य भद्रबाहु के साथ कर्नाटक में स्थित स्वर्ण बेलगोला चले गये तथा अपना नाम बदलकर विशाखाचार्य रख लिया था।
- यहाँ स्थित चन्द्र पहाड़ी पर सल्लेखना पद्धति से अपने प्राण त्याग दिये।

- चन्द्रगुप्त मौर्य के समय सौराष्ट्र प्रान्त के गवर्नर पुष्यगुप्त वैश्य ने प्लासिनी व स्वर्ण सिक्ता नदियों के पानी को रोककर सुदर्शन झील का निर्माण करवाया।
- **विलसेट ऑर्थर स्मिथ–** चन्द्रगुप्त के उस वैज्ञानिक सीमा को प्राप्त कर लिया था जो अंग्रेज भी प्राप्त नहीं कर पाये थे।
- चन्द्रगुप्त मौर्य से संबंधित दो ताम्र पत्र महास्थान (बांग्लादेश, सोहगौरा (उ.प्र.) से प्राप्त हुआ है।
- महास्थान से चन्द्रगुप्त की बंगाल विजय की पुष्टि होती है। इसके अलावा इससे अकाल नीति व कांकणी नाम ताम्र मुद्रा का भी उल्लेख है।
- जैन ग्रंथ परिशिष्ट पर्वन में लिखा है कि चन्द्रगुप्त मौर्य के समय 12 वर्षों तक भीषण अकाल पड़ा था।

बिन्दुसार 298 ई.पू. से 273 ई.पू. तक

- माता – दुर्धरा
- पिता – चन्द्रगुप्त मौर्य

उपाधियाँ

- यूनानी साहित्य में – अमित्रोकेटस (शत्रुओं का नाशक)
- जैन ग्रंथों में – सिंहसेन
- वायु पुराण में – भद्रसार
- चाणक्य कुछ समय बिन्दुसार के काल में भी प्रधानमंत्री रहा।
- चाणक्य के बाद खल्लाटक प्रधानमंत्री बना तथा ऐसा लिखा कि बिन्दुसार के दरबार में 500 मंत्रियों की एक परिषद् थी जिसका संचालन खल्लाटक किया करता था।
- खल्लाटक के बाद राधागुप्त प्रधानमंत्री बना।
- स्ट्रेबों ने लिखा है कि सीरिया के शासक एण्टयोकस प्रथम ने डायमेकस को दूत बनाकर बिन्दुसार के दरबार में भेजा था।
- बिन्दुसार ने डायमेकस से तीन चीजों की माँग की– मदिरा, सुखी अंजीर तथा दार्शनिक।
- डायमेकस व बिन्दुसार के मध्य हुई चर्चा का उल्लेख एथीनियस के द्वारा किया गया।
- प्लिनी ने लिखा कि मिश्र के शासक टॉलमी– II ने डायनेसियस को दूत बनाकर भेजा।
- बिन्दुसार के दरबार मे आजीवक सम्प्रदाय के आचार्य पिगलवत्स रहा करते थे।
- पिगलवत्स के द्वारा भविष्यवाणी की गयी कि अशोक मगध का शासक होगा।
- बिन्दुसार ने पुत्र सुसीम को तक्षशीला तथा अशोक को उज्जैनिया का प्रान्तपति नियुक्त किया।
- तक्षशीला में हुए विद्रोह को दबाने के लिए बिन्दुसार ने अशोक को भेजा।